मिठाई तो हमें खूब पसंद है

– भारती पंडित

स्कूल– शासकीय प्राथमिक शाला नवीन दामखेड़ा, भोपाल

लक्षित कक्षा – 1 व 2 (जिन्हें ठीक से पढ़ना–लिखना नहीं आता)

उद्देश्य

- पढ़ने–लिखने की प्रक्रियाएं बच्चों के परिवेश और अनुभवों से जुड़ी सामग्री से जोड़कर की जाएं तो पढ़ना–लिखना जल्दी सीखा जा सकता है इसे जांचना।
- वर्णमाला से शुरुआत किए बिना भी पढ़ना सीखा जा सकता है इसे जांचना।

पहला दिन (10 सितम्बर 2018)

शासकीय प्राथमिक शाला नवीन दामखेड़ा में मैं अक्सर लघुकालिक कोर्स और कक्षा पुस्तकालय आदि की बातचीत के लिए जाती रहती हूं और इस दौरान बच्चों से बातचीत, कहानी–कविता सुनना–गाना आदि गतिविधियां भी कराती रहती हूं अतः काफी बच्चों से पहचान है। अपने उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए मैंने शिक्षिका श्रीमती स्नेहल बुधकर से कक्षा 1 और 2 के उन बच्चों की कक्षा लेने की इच्छा जताई जिन्हें ठीक से पढ़ना–लिखना न आता हो। मैडम ने ऐसे करीब बाईस बच्चे मेरे सुपुर्द किए। चूंकि बच्चों से पहले से जान–पहचान थी अतः मुझे देखते ही उनकी कहानी सुनाओ, कविता सुनाओ की फरमाइश शुरू हो गई। एक कविता "रिमझिम रिमझिम पानी आया" सुनाने के बाद मैंने उन्हें आधे घेरे (semicircle) में बिठाया। किस–किस को अपना नाम मालूम है? पूछने पर सम्मिलित आवाज़ गूँजी, मैडम हमें, हमें...

"ठीक है तो हर बच्चा एक–एक करके अपना नाम बोलता जाएगा..." मेरे निर्देश के बाद हर बच्चा अपना नाम बोलता गया और मैंने सभी के नाम बोर्ड पर लिख दिए। साथ में मैंने अपना नाम भी लिख दिया। अब हमने बारी–बारी से हर बच्चे के नाम को पढ़ा। यह गतिविधि तीन बार दोहराई गई जिसमें मैं हर नाम के नीचे उंगली रखती गई और ज़ोर से नाम बोलती गई, बच्चे भी उन नामों को देखकर दोहराने लगे। यहां मेरा उद्देश्य बच्चों को उनके नामों की ध्वनि और उनके नामों के चित्र से परिचित कराना था। अब मैंने उनसे कहा कि मैं जिस नाम की ओर इशारा करूंगी और पुकारूंगी, वह बच्चा अपना हाथ उठाएगा। पहले–पहल तो बच्चे समझे नहीं मगर एक–दो बच्चों ने किया तो बाकी भी समझ गए और इसके बाद जैसे–जैसे मैं नामों पर उंगली रखती गई और नाम बोलती गई, बच्चे हाथ उठाने लगे।

अब इसके अगले चरण में मैंने निर्देश दिया, अब मैं नाम बोलूंगी नहीं, केवल उंगली रखूंगी और जिसका नाम

होगा, वह उठकर यहां आएगा। पहले नाम के नीचे उँगली रखते ही सानिया उठकर चली आई और उसने अपने नाम के चारों और गोला बना दिया। सभी बच्चों को इस खेल में मज़ा आने लगा। अभिषेक, हेमंत, प्रियंका और दुर्गा अपना नाम न पहचान सके तो उनके मित्रों ने उनकी मदद करते हुए उन्हें कहा, दुर्गा हाथ उठा, ये तेरा नाम है...

अब बोर्ड पर मेरा नाम बिना गोले का बचा था। मैंने पूछा अरे ये किसका नाम छूट गया? बच्चे तपाक से बोले, ये तो आपका नाम है मैम, भारती...यानी वे मेरे नाम के चित्र को भी पहचान पा रहे थे। इस प्रक्रिया का एक चरण पूरा हुआ था। जिन चार बच्चों को अपना नाम पहचानने में दिक्कत हुई थी, उनके नामों को उंगली रखते हुए हम सबने फिर से पढ़ा।

मैंने देखा कि इन सारे नामों में न, म और र अक्षर बार–बार आए हैं। अतः इसी गतिविधि को आगे बढ़ाते हुई मैंने बोर्ड पर एक गोला बनाते हुए उसमें न अक्षर लिख दिया और उसे ज़ोर से पढ़ा– यह है न, चलो अब इन सारे शब्दों में न कहां–कहां आया है, उसे लकीर खींचकर बताएंगे। बच्चे बारी–बारी से बोर्ड के पास आते गए और लिखे हुए शब्दों में जहां भी न आया था, उसके नीचे लकीर खींचते गए। लकीर खींचने का काम पूरा होने के बाद सभी ने उन नामों को फिर से पढ़ा, इस बार न पर जोर देते हुए।

अब मैंने बच्चों से पूछा, हमने इन शब्दों में न की पहचान की। अब और कौन से शब्द आपको मालूम हैं जो न से शुरू होते हैं? मैंने बोर्ड पर एक गोला बनाकर उसमें न लिख दिया और बच्चे फटाफट न से शुरू होने वाले शब्दों की बौछार सी करते गए। उन्होंने वे भी शब्द बताए जो टीवी में सुने थे, जैसे– नटखट, निकले आदि। इस तरह से हमने न से शुरू होने वाले शब्दों का जाल बनाया। अब इस जाल में लिखे हुए सारे शब्दों को सबने मिलकर पढ़ा। मैम, इनको लिख लें? मेरे हां कहते ही बच्चों ने कॉपी में मेरे जैसा जाल बनाकर लिखना शुरू कर दिया।

दूसरा दिन (11 सितम्बर 2018)

कल की ही गतिविधि को जारी रखते हुए बोर्ड पर वापस सारे बच्चों के नामों को लिखा गया और अब मैंने उन्हें उनमें से 'म' किस–किस शब्द में आया है, उसे दिखाने के लिए कहा। बच्चों ने बारी–बारी से आकर 'म' के नीचे रेखा खींची। यही प्रक्रिया 'र' के साथ भी दोहराई गई।

अब जैसे ही मैंने बोर्ड पर 'म' को एक गोले में लिखा, बच्चों ने पूछा, मैम, 'म' के शब्द बताएँ? मुझे हँसी आ गई उनकी तीव्र बुद्धि पर। मैंने कहा, अब हर बच्चा पहले अपनी कॉपी में एक–एक शब्द लिखेगा और फिर अपनी बारी आने पर उसे बोलेगा। वे झटपट शब्द लिखने लगे। कुछ बच्चे लिखने के नाम से यहां–वहां देखने लगे, 'मैम, लिखना नहीं आता...'

जो समझ में आए, लिख लो...यह सुनते ही बच्चे कॉपी में कुछ–कुछ बनाने लगे। जब सबने एक–एक शब्द लिख लिया तो मैंने उनसे पूछकर शब्दों को बोर्ड पर लिखना शुरू किया। बच्चों को निर्देश दिया कि वे कॉपी में लिखे शब्द का बोर्ड के शब्द से मिलान करें और यदि गलत लगे तो उसे सुधार लें। बच्चों ने जब अपना–अपना शब्द सुधार लिया तो हमने सभी शब्दों को जोर से पढ़ा और फिर बारी–बारी से बच्चों को बुलाकर अपने शब्द पर गोला लगाने के लिए कहा। कुछ बच्चों को इसमें दिक्कत हुई तो उन्हें मैंने अपनी कॉपी साथ लेकर आने और उसमें से देखकर शब्द पहचानने के लिए कहा।

मैंने सारे शब्द एक सूची के रूप में बोर्ड पर लिख दिए। बच्चों ने उन्हें भी जल्दी से कॉपी में उतारना शुरू कर दिया। इतने में एक बच्चा बोला, मैम अब गणेश जी आने वाले हैं। हाँ, तो उनके लिए खूब सारी मिठाइयाँ भी बनेंगी न? तो चलो उनके भी नाम लिख लेते हैं। कहते हुए मैंने बच्चों से उनकी पसंद की मिठाइयों के नाम बताने को कहा। पहले तो वे मिठाई और खाद्य पदार्थों के नाम को लेकर गड़बड़ा गए मगर मैंने उन्हें अपनी पसंद की मिठाई का नाम बताया तो उनकी ओर से धीरे–धीरे कुछ नाम आने लगे। कुछ बच्चों ने दूसरे बच्चे की मिठाई को ही अपनी पसंद की मिठाई बता दिया। मैंने उनकी तरफ से आए नामों को बोर्ड पर लिख दिया। सभी नामों को बच्चों के साथ उंगली रख–रखकर पढ़ा गया। उसके बाद मैंने बोर्ड पर एक वाक्य लिखा 'भारती को रसमलाई पंसद है।'

उन्हें निर्देश दिया कि जहाँ भारती लिखा है वहाँ हर बच्चा अपना नाम लिखेगा और जहाँ रसमलाई लिखा है वहाँ अपनी पसंद की मिठाई का नाम लिखा जाएगा। बच्चे फिर काम में जुट गए। कॉपी में लिख लेने के बाद मैंने बच्चों को अपना वाक्य बोर्ड पर लिखने के लिए कहा। बच्चों ने अपना–अपना वाक्य बोर्ड पर लिखा और उसे सबने मिलकर पढ़ा।

(लेखिका अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन भोपाल, मध्यप्रदेश से जुड़ी हैं)